IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

गांधी के आर्थिक दर्शन की वर्तमान समय में उपयोगिता

Kala Jain

Assistant Professor, Department of Political Science, SD Government College, Beawar, India

सार

वर्तमान अस्थिरता के दौर में जहाँ एक ओर कोविड-19 जैसी महामारी लोगों को हताश और बेहाल किये हुए है वहीं दूसरी ओर इसके आर्थिक परिणाम भी लोगों को भविष्य के प्रति आशंकित किये हुए हैं। कभी हाथरस जैसे कांड लोगों को मानवीय मूल्यों पर चिंतन हेतु विवश करते हैं तो कभी ड्रग्स जैसे मामले समाज को झकझोरते हैं। आज संपूर्ण विश्व बाज़ारवाद के दौड़ में शामिल हो चुका है। लालच की परिणति युद्ध की सीमा तक चली जाती है।

गांधीवादी विचार व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रेरणा पाते है और इन विचारों की प्रासंगिकता अभी भी बरकरार है। आज के दौर में जब समाज में कल्याणकारी आदर्शों का स्थान असत्य, अवसरवाद, धोखा, चालाकी, लालच व स्वार्थपरता जैसे संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है तो समाज सहिष्णुता, प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्तृत करता जा रहा है। विश्व शक्तियाँ शस्त्र एकत्र करने की स्पर्धा में लगी हुई है लेकिन एक छोटे से वायरस को हरा पाने में असमर्थ और लाचार साबित हो रही है। ऐसे में विश्व शांति की पुनर्स्थापना के लिये, मानवीय मूलों को पुन: प्रतिष्ठित करने के लिये आज गांधीवाद नए स्वरूप में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है।

गांधी जी धर्म व नैतिकता में अटूट विश्वास रखते थे। उनके लिये धर्म, प्रथाओं व आंडबरों की सीमा में बंधा हुआ नहीं वरन् आचरण की एक विधि थी। गांधी जी के अनुसार, धर्मविहीन राजनीति मृत्युजाल है, धर्म व राजनीति का यह अस्तित्व ही समाज की बेहतरी के लिये नींव तैयार करता है। गांधी जी साधन व साध्य दोनों की शुद्धता पर बल देते थे।

गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है।

सत्य के साथ गांधीजी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदा विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है।

गांधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। गांधीजी का मत था कि सत्य सदैव विजयी होता है।और अगर मनुष्य का संघर्ष सत्य के लिये है तो हिंसा का लेशमात्र उपयोग किये बिना भी वह अपनी सफलता सुनिश्चित कर सकता है।

परिचय

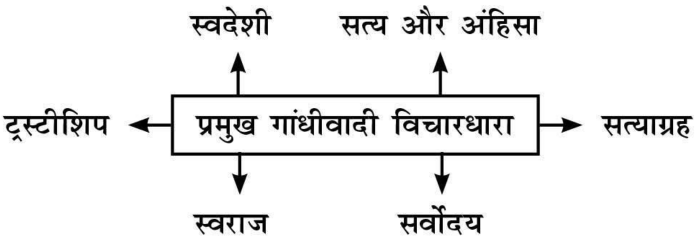

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

1.सत्य: गांधीजी सत्य के बड़े आग्रही थे। वे सत्य को ईश्वर मानते थे। सत्य उनके लिये सर्वोपरि सिद्धांत था। वे वचन और चिंतन में सत्य की स्थापना का प्रयत्न करते थे।
लेकिन वर्तमान समय में देखा जाए तो राजनीतिज्ञ, मंत्रीगण अपने पद की शपथ ईश्वर को साक्षी मानकर करने के बावजूद गलत काम करने से पीछे नहीं हटते। अपने कर्मों के पालन के समय वे सत्य को भी नकार देते हैं। अगर गांधीवादी सिद्धांतों का सही तरह से पालन किया जाए तो देश नवनिर्माण की दिशा में आगे बढ़ चलेगा।[1,2]
2.अहिंसा: गांधीजी के अनुसार मन, वचन और शरीर से किसी को भी दु:ख न पहुँचाना ही अहिंसा है।
गांधीजी के विचारों का मूल लक्ष्य सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से विरोधियों का हृदय परिवर्तन करना है।
अहिंसा का अर्थ ही होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। गांधी जी व्यक्तिगत जीवन से लेकर वैश्विक स्तर पर ‘मनसा वाचा कर्मणा’ अहिंसा के सिद्धांत का पालन करने पर बल देते थे। आज के संघर्षरत विश्व में अहिंसा जैसा आदर्श अति आवश्यक है। गांधी जी बुद्ध के सिद्धांतों का अनुगमन कर इच्छाओं की न्यूनता पर भी बल देते थे।
यदि इस सिद्धांत का पालन किया जाए तो आज क्षुद्र राजनीतिक व आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये व्याकुल समाज व विश्व अपनी कई समस्याओं का निदान खोज सकता है। आज संपूर्ण विश्व अपनी समस्याओं का हल हिंसा के माध् यम से ढूंढना चाहता है। वैश्वीकरण के इस दौर में ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की अवधारणा ही खत्म होती जा रही है।

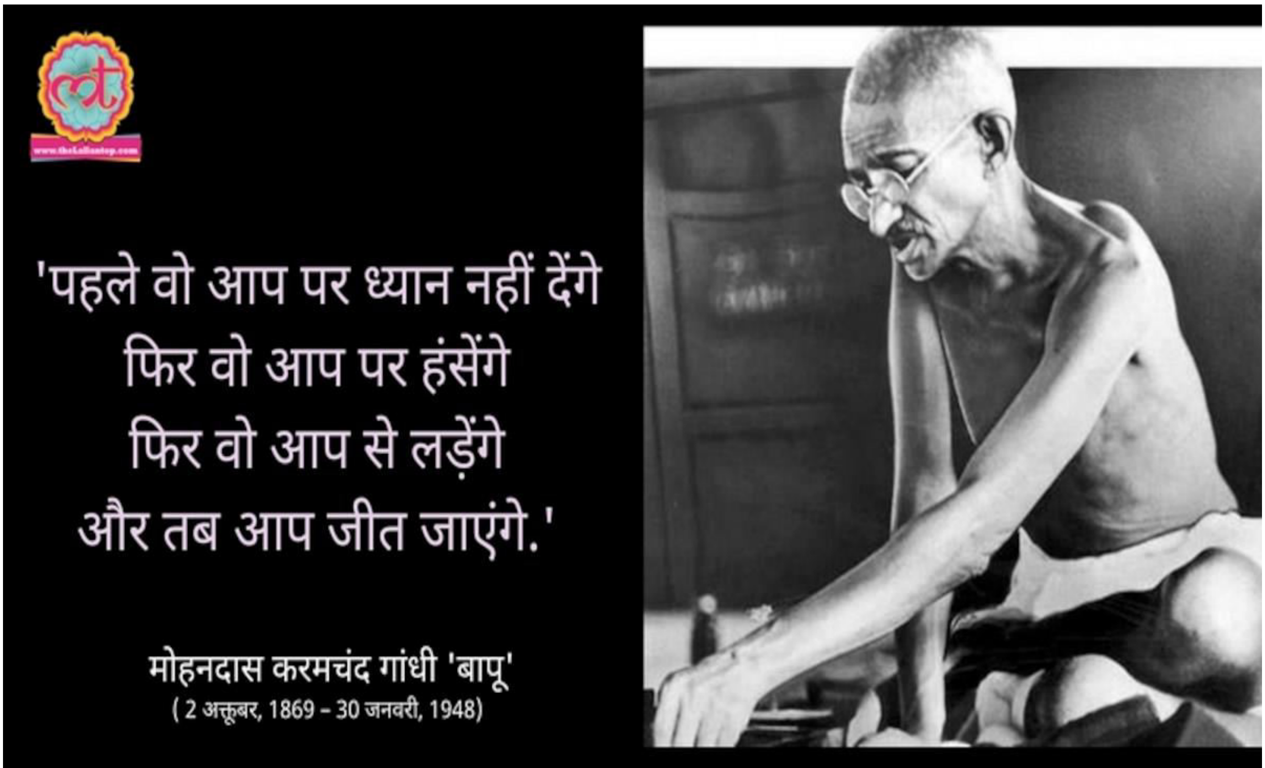

3.सत्याग्रह: सत्याग्रह का अर्थ है सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ शुद्धतम आत्मबल का प्रयोग करना। यह व्यक्तिगत पीड़ा सहन कर अधिकारों को सुरक्षित करने और दूसरों को चोट न पहुँचाने की एक विधि है। वे इसे दुर्बल मनुष्य का शस्त्र नहीं मानते थे। उनके अनुसार शारीरिक प्रतिरोध करने वाले की अपेक्षा निष्क्रिय प्रतिरोध करने वाले में कहीं ज्यादा साहस होना चाहिये। आज के समय में सत्याग्रह का प्रयोग विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितियों पर सुसंगत एवं तार्किक प्रतीत होता

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

है। राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी नीतियों, आदेशों से मतभेद की स्थिति में विरोध हेतु सत्याग्रह का प्रयोग कहीं श्रेयस्कर है। आत्मबल शारीरिक बल से अधिक श्रेष्ठ होता है। बुराई के प्रतिकार के लिये यदि आत्मबल का सहारा लिया जाए तो मौजूदा परेशानियाँ दूर की जा सकती हैं।

4.सर्वोदय: सर्वोदय शब्द का अर्थ है 'सार्वभौमिक उत्थान' या सभी की प्रगति। यह शब्द पहली बार गांधीजी ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर जॉन रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' में पढ़ा था।
गांधीजी ने कहा था "मैं अपने पीछे कोई पंथ या संप्रदाय नहीं छोड़ना चाहता हूँ।" यही कारण है कि सर्वोदय आज एक समर्थ जीवन, समग्र जीवन और संपूर्ण जीवन का पयार्य बन चुका है।[3,4]
आज के दौर में पूरा विश्व एक ऐसे ही समाज की खोज में है जहाँ शोषण , वर्ग, जाति आदि की कोई जगह न हो।
कहीं रोहिंग्या तो कहीं शिया और सुन्नी के नाम पर हिंसा हो रही है तो कहीं आतंक फैलाया जा रहा है। एक वर्ग दूसरे का शोषण कर रहा है जिससे समाज में अव्यवस्था फैल रही है। अगर गांधीजी के सर्वोदय की संकल्पना साकार होती है तो संपूर्ण विश्व एक परिवार का रूप ले सकता है।

5.स्वराज: आत्मनिर्भर व स्वायत्त ग्राम पंचायतों की स्थापना के माध्यम से ग्रामीण समाज के अंतिम छोर पर मौजूद व्यक्ति तक शासन की पहुँच सुनिश्चित करना ही गांधी जी का ग्राम स्वराज सिद्धांत था। आर्थिक मामलों में भी गांधीजी विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था के माध्यम से लघु, सूक्ष्म व कुटीर उद्योगों की स्थापना पर बल देते थे। उनका मत था कि भारी उद्योगों की स्थापना के पश्चात् इनसे निकलने वाली जहरीली गैसें व धुंआ पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं, साथ ही बहुत बड़े उद्योगों का अस्तित्व श्रमिक वर्ग के शोषण का भी मार्ग तैयार करता है। आज इस महामारी के दौर में जब पूरे विश्व को एक बार फिर आर्थिक मंदी की ओर जाने का खतरा दिखाई दे रहा है ऐसे में इन कुटीर उद्योगों की स्थापना गरीब श्रमिकों के लिये आशा की किरण साबित होगी।

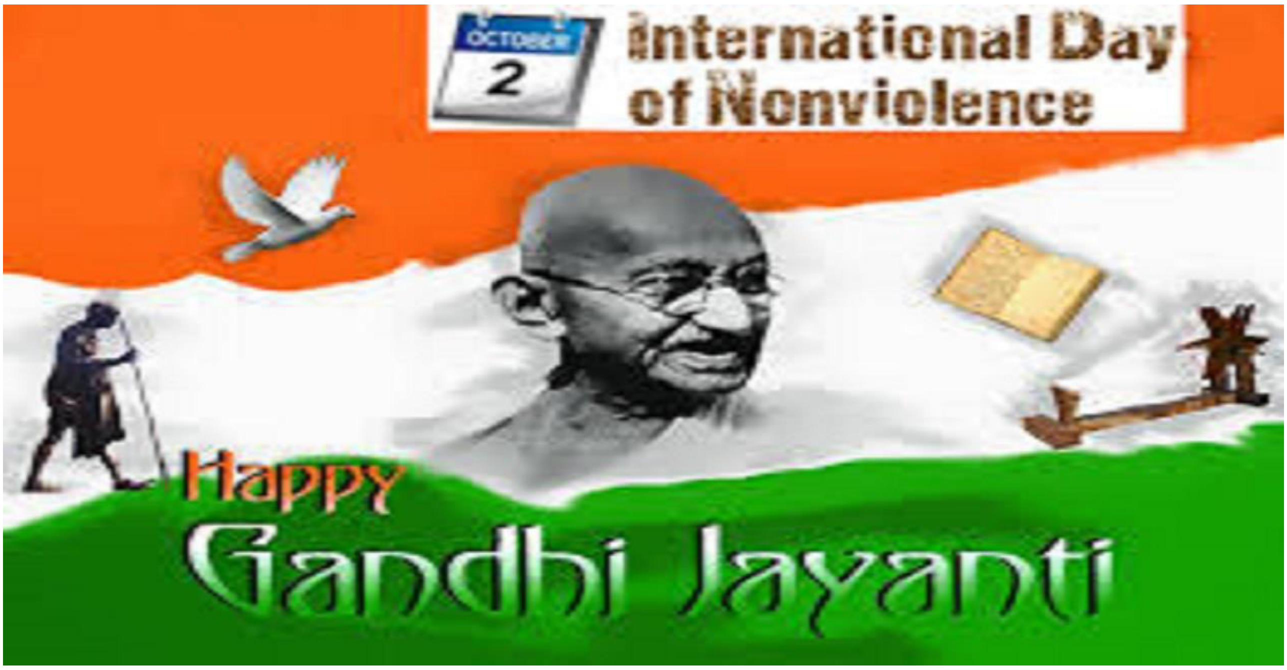

6.ट्रस्टीशिप: वर्तमान समय में गांधीजी की यह विचारधारा काफी प्रासंगिक है जब विश्व में गरीबी और भूखमरी चारों तरफ अपना साया फैलाये खड़ी है। गांधीजी का यह विचार कि धन व उत्पादन के साधनों पर सामूहिक नियंत्रण की स्थापना हेतु न्यास जैसी व्यवस्था स्थापित की जाए, काफी मायने रखती है।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

7.स्वदेशी: स्वदेशी शब्द संस्कृत से लिया गया है और यह संस्कृत के दो शब्दों का एक संयोजन है। 'स्व' का अर्थ है स्वयं और देश का अर्थ देश ही है अर्थात् अपना देश। स्वदेशी का शाब्दिक अर्थ अपने देश से लिया जाता है परंतु अधिकांश संदर्भों में इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में लिया जा सकता है। स्वदेशी राजनीतिक और आर्थिक दोनों तरह से अपने समुदाय के भीतर ध्यान केंद्रित करता है। यह समुदाय और आत्मनिर्भरता की अन्योन्याश्रिता है। गांधीजी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि भारत का ब्रिटिश नियंत्रण उनके स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण में निहित था। स्वदेशी अभियान भारत की स्वतंत्रता की कुंजी थी और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में चरखे द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था।आज जब बेरोजगारी देश की इतनी बड़ी स मस्या है तब गांधीजी के इस विचार को ध्यान में रखकर शिक्षा नीतियाँ बनाना लाभप्रद होगा। गांधीजी का राष्ट्र का विचार भी अत्यंत प्रगतिशील था। उनका राष्ट्रवाद 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विस्तार से प्रेरित था। वे राष्ट्रवाद की अंतिम परिणति केवल एक राष्ट्र के हितों तक सीमित न मानते हुए उसे विश्व कल्याण की दिशा में विस्तृत करने पर बल देते थे। आजकल राष्ट्रवाद का अतिवादी स्वरूप हो ता देखकर गांधीवादी राष्ट्रवाद सटीक लगता है।[5,6]
हम पाते हैं कि गांधीजी के विचार शाश्वत है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि उन्होंने जमीनी तौर पर अपने विचारों का परीक्षण किया और जीवन में सफलता अर्जित की जो न सिर्फ स्वयं के लिये अपितु पूरे विश्व के लिये थी। आज दुनिया गांधी के मार्ग को सबसे स्थायी रूप में देखती है।

विचार - विमर्श

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्य और अहिंसा का उद्घोष कर आंदोलन की धार को और पैनी करने वाले महात्मा गांधी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।

उन्होंनें स्वतन्त्र भारत के पुनर्निर्माण के लिए रामराज्य का स्वप्न देखा था। वे कहा करते थे कि "नैतिक और सामाजिक उत्थान को ही हमने अहिंसा का नाम दिया है। यह स्वराज्य का चतुष्कोण है। इनमें से एक भी अगर सच्चा नहीं है तो हमारे स्वराज्य की सूरत ही बदल जाती है। मैं राजनीतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता की बात करता हूँ। राजनीतिक स्वतन्त्रता से मेरा मतलब किसी देश की शासन प्रणाली की नकल से नहीं है। उनकी शासन प्रणाली अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार होगी, परन्तु स्वराज्य में हमारी शासन प्रणाली हमारी अपनी प्रतिभा के अनुसार होगी। मैंने उसका वर्णन 'रामराज्य' शब्द के द्वारा किया है। अर्थात विशुद्ध राजनीति के आधार पर स्थापित तन्त्र। मेरे स्वराज्य को लोग अच्छी तरह समझ लें, भूल न करें। संक्षेप में वह यह है कि विदेशी सत्ता से सम्पूर्ण मुक्ति और साथ ही सम्पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता। इस प्रकार एक सिरे पर आर्थिक स्वतंत्रता है और दूसरे सिरे पर राजनीतिक स्वतंत्रता, परन्तु इसके दो सिरे और भी हैं। इनमें से एक है नैतिक व सामाजिक और दूसरा धर्म। इसमें हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाई वगैरह आ जाते हैं। परन्तु एक जो इन सबसे उपर है, इसे आप सत्य का नाम दें सकते हैं। सत्य यानि कि केवल प्रासंगिक ईमानदारी नहीं बल्कि वह परम सत्य जो सर्व व्यापक है और उत्पत्ति व लय से परे है।"
मूलरूप से गांधी जी की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था करुणा, प्रेम, नैतिकता, धार्मिकता व ईश्वरीय भावना पर आधारित है। उन्होंनें नरसेवा को ही नारायण सेवा मानकर दलितोद्धार व दरिद्रोद्धार को अपने जीवन का ध्येय बनाया। वे शोषणमुक्त, समतायुक्त, ममतामय, परस्पर स्वावलम्बी, परस्पर पूरक व परस्पर पोषक समाज के प्रबल हिमायती थे। उनका मानना था कि राजसत्ता और अर्थसत्ता के विकेन्द्रीकरण के बिना आम आदमी को सच्चे लोकतन्त्र की अनुभूति नहीं हो सकती। सत्ता का केन्द्रीयकरण लोकतन्त्र की प्रकृति से मेल नहीं खाता। उनकी ग्राम-स्वराज्य की कल्पना भी राजसत्ता के विकेन्द्रीकरण पर आधारित है।[7,8]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

5 फरवरी 1916 को काशी के नागरी प्रचारिणी सभागार में एक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था-"मेरे सपनों का स्वराज्य गरीबों का स्वराज्य होगा। जीवन की जिन आवश्यकताओं का उपभोग राजा और अमीर लोग करते हैं, वही उन्हें भी सुलभ होना चाहिए। इसमें फर्क के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। ऐसे राज्य में जाति-धर्म के भेदों का कोई स्थान नहीं हो सकता। उस पर धनवानों और अशिक्षितों का एकाधिपत्य नहीं होगा। वह स्वराज्य सबके कल्याण के लिए होगा। लेकिन यह स्वराज्य प्राप्त करने का एक निश्चित रास्ता है।" इसको समझाने के लिए वे कहते थे-"ध्येयवादी जीवन के चार तत्व होते हैं- साधक, साधन, साधना और साध्य। साध्य का अर्थ लक्ष्य या ध्येय से है। यदि किसी समय हमारा लक्ष्य धन कमाना है, तो धन कमाने के भी कई तरीके हो सकते हैं। यह धन चोरी करके भी प्राप्त किया जा सकता है और पुरूषार्थ व पराक्रम से भी, लेकिन पुरूषार्थ व पराक्रम से प्राप्त धन 'पवित्र धन' कहा जायेगा और चोरी से प्राप्त धन 'चोरी का धन'। ऐसी स्थिति में साध्य पवित्र नहीं रह जायेगा। इसलिए साध्य की पवित्रता के लिए यह आवश्यक है कि साधन, साधक व साधना तीनों पवित्र हों। किसी एक के पवित्र होने से काम नहीं चलेगा।"[9,10]
गांधी जी के विचार और वर्तमान के सम्बन्ध में चिन्तन करने पर लगता है कि आज की स्थिति, परिस्थिति और लोगों की मन:स्थिति में बहुत अन्तर है। सब एन-केन-प्रकारेण साध्य तक पहुँचने को आतुर दिखते हैं। इस आतुरता की जिद में सारे नीति, नियम, कायदे व कानून को तोड़कर हम अनैतिक व हिंसक हो जाते हैं। यहीं से विकृति प्रारम्भ होती है, और राष्ट्रहित के स्थान पर स्वहित दिखायी देने लगता है। हर क्षेत्र में आधारभूत ढांचे से हटकर परिवर्तन हुआ है। इस सृष्टि की सर्वोच्च शासन व्यवस्था 'लोकतन्त्र' पूँजीवादी तन्त्र में परिवर्तित हो गयी है। सामान्य निर्धन व्यक्ति जनता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। संसद और विधानमण्डल के दोनों सदनों में लगभग 45 प्रतिशत से अधिक सदस्य किसी न किसी प्रकार से अपराधियों की श्रेणी में आ जाते हैं। कुल मिलाकर आज की राजनीति में अपराधियों का बोल-बाला है।

आधुनिक भारत का निर्माण करने वालों नें आधुनिक शिक्षा बनाने की आंड़ में गांधी के विचारों को दरकिनार कर दिया। जिससे आज ऐसी स्थिति हो गयी है कि एक गरीब बालक के लिए वांछित शिक्षा प्राप्त करना दुष्कर हो गया है। इन सारी स्थितियों और परिस्थितियों का एक कारण यह भी है कि गांधीवादी विचारधारा का झंडा तथाकथित गांधीवादियों ने थाम रखी है। जिस चरखे और खादी से उन्होंनें जन-जन को जागरुक किया था, वही आज हांसिये पर धकेल दिया गया है। खादी पहनने वाले खादी की लाज भूल चुके हैं। उनके लिए खादी स्वयं को नेता सिद्ध करने वाली पोषाक भर बन कर रह गयी है। उनके सहयोगियों नें उनके मूल्यों और कार्यक्रमों को तिलाजंलि दे दी है। सरकार के काम-काज में गांधीवादी सरोकारों और लक्ष्यों को देखना निराश ही करता है।
गांधी के विचारों की प्रासंगिकता का सवाल उनकी जन्म और पुण्यतिथि पर हमेशा उठता है, लेकिन गांधी तो आजादी मिलने के बाद से ही अलग-थलग पड़ गये थे। गांधी का सपना गांधी के सच्चे सपूतों नें ही तार-तार करके रख दिया है। ऐसी स्थिति में लगता है कि गांधी का सपना केवल स्वप्न बनकर रह जायेगा। फिर भी, तेजी से बदल रहे परिवेश के कारण गांधी के विचारों की प्रासंगिकता आज महती आवश्यकता के रुप में अनुभव की जा रही है।

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

क्या यह हमारी झूठी संतुष्टि और हमारे पाखंड का दिखावा भर नहीं है? ये सवाल बीते कई सालों से पूछे जा रहे हैं. इन दिनों ऐसे सवाल कुछ और तरीक़ों से भी पूछे जा रहे हैं. ऐसा ही एक तरीक़ा है गोडसे का बचाव करना,जो अब एक ट्रेंड बन चुका है.[11,12]
लेकिन इस सवाल का जवाब क्या है, क्या हो सकता है?
गांधीजी का जीवन किसी नदी की भांति था जिसमें कई धाराएं मौजूद थीं. उनके अपने जीवन में शायद ही ऐसी कोई बात रही हो जिन पर उनका ध्यान नहीं गया हो या फिर उन्होंने उस पर अपने विचारों को प्रकट नहीं किया हो.

परिणाम

संघर्ष और उसके साथ सकारात्मक गतिविधियां, उनके जीवन में एक साथ समानान्तर चलती रहीं.
आज़ादी की लड़ाई के साथ-साथ उन्होंने छुआछूत उन्मूलन, हिंदू-मुस्लिम एकता, चरखा और खादी को बढ़ावा, ग्राम स्वराज का प्रसार, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा और परंपरागत चिकित्सीय ज्ञान के उपयोग सहित तमाम दूसरे उद्देश्यों पर काम करना जारी रखा था. उन्होंने पूरे देश की यात्रा भी की थी.
अपनी लोकप्रियता के साथ उन्होंने लोगों को कड़वी सच्चाई बताने का काम भी जारी रखा, हालांकि ऐसा करते हुए अलोकप्रिय होने का ख़तरा ज़रूर था. उन्होंने सत्य और अहिंसा की महानता को बताने की काफ़ी कोशिशें कीं हालांकि उनके ये दोनों प्रयोग बड़े स्तर पर नाकाम रहे लेकिन इससे कई लोगों के जीवन को नई दिशा मिली.
उन्हें जानने भर से या फिर महज़ एक बार मिलने भर से कई लोगों ने अपनी पूरी ज़िंदगी उनके सिद्धांतों को अपनाने में लगा दी. हर दौर में, इंसान अपनी मूर्खताओं और कमज़ोरियों के साथ जैसा है मोटे तौर पर वैसा ही बना रहता है. लेकिन गांधी जी के दौर में, उनकी प्रेरणा और उनकी क़द्दावर शख़्सियत के असर से बड़े पैमाने पर लोग अपने बुरे तत्वों को दूर रखने और अपने अच्छे तत्वों को बाहर निकालने में कामयाब रहे.
MAGES
हालांकि बाद में सांप्रदायिकता ने लोगों की अच्छाइयों को अपनी चपेट में ले लिया और बड़े पैमाने पर हिंसा देखने को मिली. असहाय महसूस करने और अकेले में रोने के बजाए गांधी अपने जीवन के अंतिम चरण में आम लोगों के आंसू पोछने उन तक पहुंचे.
जीवन के अंतिम दौर में वे शारीरिक अक्षमता के साथ साथ मानसिक पीड़ा भी झेल रहे थे. लेकिन ऐसी परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने रास्ता दिखाया कि जब अपने सपने ध्वस्त होने लगें तो क्या करना चाहिए.
आज़ादी मिलने पर दिल्ली में हुए जश्न में शरीक होने के बदले वे सांप्रदायिक हिंसा की आग को कम करने के लिए कोलकाता गए.GES[13,14]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

गांधी का जीवन और उनका काम काफ़ी विस्तृत है. लिहाज़ा उनसे कई असहमतियां हो सकती हैं. लेकिन केवल असहमतियों को रेखांकित करके हम उनकी विरासत का अपमान करने की मूर्खता ही कर पाएंगे. आज ज़रूरत ख़ुद से सवाल पूछने की है, क्या उन्हें याद करना बुद्धिमता है या फिर उन्हें भुला देना बुद्धिमता होगी? या हमें उनका नाम केवल सरकारी कार्यक्रमों में लेना है और गांधी के हत्यारों को सम्मानित करना है? अगर अभी भी इन सवालों पर विचार करने की गुंजाइश बची हो तो हमें इन मूर्खताओं पर सोचने की ज़रूरत है.

सार्वजनिक जीवन वाले किसी भी शख़्स का हमलोग जिस तरह से आकलन करते हैं उसी तरह से गांधी के जीवन का भी कठोरता के साथ आकलन होता रहा है.[13,14]

उनकी ख़ूब आलोचना भी होती रही है. लेकिन अगर पूर्वाग्रह के साथ कोई आलोचना हो या फिर आलोचना करने के लिए ही आलोचना की जा रही हो तो इस अभ्यास का फ़ायदा नहीं होता है. अरुंधति राय जैसे लोग इस कैटेगरी में आते हैं, जिनके पास आलोचना करने के लिए कुछ ठोस दलीलें हैं लेकिन वे गांधी की आलोचना करने के विचार में इतने रमे हुए हैं कि वे इसके लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं.

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विद्वानों की तरह दूसरे आलोचक भी हैं, जिनकी प्रवृति एक पेड़ की आलोचना करते हुए पूरे जंगल की आलोचना करने की होती है. ऐसा करते हुए वे जंगल में मौजूद दूसरे फ़ायदेमंद पेड़ों की उपेक्षा करने लगते हैं. ऐसे आलोचक गांधी को ओवररेटेड और उनके व्यक्तित्व को अनुपयोगी बताते हुए उन्हें पूरी तरह से ख़ारिज करते हैं.

कुछ आलोचक ऐसे भी हैं जो डॉ. आंबेडकर का बहुत सम्मान करते हैं और उनमें गांधीजी की आलोचना की प्रवृति होती है. वे यह मानते हैं कि गांधीजी को विलेन साबित करना उनका दायित्व है.

पूना पैक्ट और जाति व्यवस्था जैसे मुद्दे हैं, जिसे डॉ. आंबेडकर के नज़रिए से देखा जा सकता है और गांधीजी के नज़रिए से भी देखा जा सकता है. दोनों नज़रिए का विश्लेषण करने पर यह संभव है कि आप डॉ. आंबेडकर का नज़रिया स्वीकार कर लें और गांधीजी के नज़रिए की आलोचना करें.

लेकिन ऐसा आकलन करते हुए दूसरे दलित मुद्दों पर गांधीजी के कामों की उपेक्षा करना सही नहीं होगा. दलित मुद्दों पर उनके कुछ पक्षों की आलोचना करते हुए कुछ दूसरे पक्षों पर किए उनके कामों की उपेक्षा करना सही तरीक़ा नहीं है. यह गांधीजी के साथ अन्याय तो होगा ही साथ में यह आकलन करने वालों की विचार प्रक्रिया पर भी सवाल उत्पन्न करेगा.

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

गांधीजी की एकदम विरोध स्तर पर आलोचना करने वालों में गोडसे भक्त, मुस्लिमों से घृणा करने वाले और हिंदुत्व की सीमित समझ रखने वाले लोग भी शामिल हैं. ऐसे आलोचक केवल राजनीतिक तौर पर हिंदुत्ववादी संकीर्ण एजेंडे को बढ़ावा देने वाले लोग हैं. इनमें हिंदुत्व के विस्तृत पहलुओं की कोई समझ नहीं होती.
अपनी संकीर्ण और सीमित सोच के चलते वे गांधीजी से घृणा करते हैं. वे अपनी नफ़रत को सही दर्शाने के लिए झूठे और अधकचरे तथ्यों का सहारा लेते हैं. वे अपनी घृणा को धार्मिकता या राष्ट्रवाद से जोड़ देंगे और अपुष्ट स्रोतों से आने वाली जानकारियों का हवाला देंगे.[15,16]

ऐसे आलोचक तथ्यों की बहुत परवाह नहीं करते और केवल उन सूचनाओं का इस्तेमाल करते हैं जो उनके उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले होते हैं.
गांधी की आलोचना करने वाले तीसरी तरह के लोग भी हैं जो उतने हानिकारक नहीं हैं. ये वे लोग हैं जिन्हें संदिग्ध स्रोतों से गांधी के बारे में जानकारी मिलती है. वे उन झूठी जानकारियों पर विश्वास करने लगते हैं और उसके आधार पर गांधी के बारे में विचार बनाते हैं. ऐसी झूठी जानकारियां अब सोशल मीडिया में थोक स्तर पर उपलब्ध हैं.
ऐसे आलोचकों के अलावा हमें उन लोगों से भी सावधान रहने की ज़रूरत है जो गांधी को केवल मार्केटिंग गुरु और ग्रेट कम्यूनिकेटर के तौर पर पेश करना चाहते हैं और उनकी मूल्यवान विरासत में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है.
सत्य, अहिंसा, सभी के लिए समानता, सभी धर्मों के प्रति सम्मान भाव, छुआछूत का उन्मूलन और ऐसे दूसरे उच्च मूल्यों के लिए उनके संघर्षों को एक तरफ़ रखकर हमलोग केवल स्वच्छता और संचार क्षमता को गांधी की विरासत का संकेत मान लेंगे तो यह वैसे पेड़ की कल्पना होगी जिससे लकड़ी ग़ायब हो. यह काफ़ी सतही नज़रिया होगा, जिसमें मूल तत्वों का अभाव होगा.

गांधीजी के साथ जो होना था वह 30 जनवरी, 1948 की शाम को ही हो चुका है. इसलिए हमें गांधीजी की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है.
हमें अपने लिए गांधीजी की चिंता करने की ज़रूरत है और हमें उनकी विरासत में दिलचस्पी लेनी चाहिए.
गांधीजी ने हम लोगों के सामने कुछ आदर्श विचार रखे थे. सार्वजनिक जीवन के लिए भी उन्होंने हमें ख़राब लोगों के लिए ख़राब होना नहीं सिखाया बल्कि ख़राब लोगों के प्रति ईमानदार होना सिखाया था.
सार्वजनिक जीवन में किसी नेता, किसी राजनीतिक दल या फिर किसी संस्थान के प्रति हम पूरी तरह समर्पण कर दें यह हमारा लक्ष्य, आदर्श या उपलब्धि नहीं होनी चाहिए.

निष्कर्ष

गांधीजी के आदर्शों को मानना काफ़ी मुश्किल है, लेकिन इसलिए तो वे आदर्श हैं, नहीं? गांधीजी ख़ुद अपने आदर्शों को सौ प्रतिशत नहीं अपना सकते थे.

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

संभवत: यही वजह है कि गांधीजी जीवन भर ख़ुद को बेहतर बनाते रहे. वे हमेशा उच्च स्तर को हासिल करने की कोशिश करते रहे. अगर हमने ख़ुद को किसी राजनीतिक या फिर धार्मिक नेता की सेवा में समर्पित कर दिया तो हम केवल नाम के लिए स्वतंत्र रह जाते हैं.मेज स्रोत,GANDHI FILM FOUNDATION

ऐसी स्थिति में हमारा दिमाग़ और हमारी सोच प्रक्रिया दोनों स्वतंत्र नहीं रह पाती है. हमारा दिमाग़ और हमारे विचार किसी और से संचालित होने लगते हैं.

गांधीजी कभी नहीं चाहते थे कि लोग इस तरह से समर्पण करें. उनके अपने प्रिय रिश्तेदार, उनके नज़दीकी दोस्त और उनके अनुयायियों, सबने उनसे कई बार असहमतियां जताईं. गांधीजी के आदर्श किसी भरी हुई टोकरी की तरह नहीं हैं, जहां या तो पूरी टोकरी लेने या नहीं लेने का ही विकल्प हो.

अगर आप गांधीजी को संपूर्णता से समझना चाहते हैं हमें ब्रह्मचर्य पर उनके विचार को समझना चाहिए. हमें उसे अपनाने की ज़रूरत नहीं है.

हम ब्रह्मचर्य पर उनके विचार को पसंद नहीं कर सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम उनके दूसरे आदर्शों को भी नापसंद ही करें. वे शुद्धता हासिल करने की जगह शांतिपूर्ण अस्तित्व को तरजीह देते थे, यह एक तरह से धोखा देने जैसा भी माना जा सकता है.मेज स्रोत,GETTY IMAGES

गांधी को मानने के लिए हमें टोपी या धोती पहनने की ज़रूरत नहीं है और ना ही ब्रह्मचर्य को अपनाने की ज़रूरत होगी. लेकिन हमें किसी से घृणा की ज़रूरत नहीं है. अगर हम घृणा से भरे हों और गांधीजी को मानते हों तो हमारे अंदर से घृणा ग़ायब होने लगेगी और शांति महसूस करने लगेंगे.

आज की राजनीति एकदम अलग तरीक़े की हो गई है जहां घृणा और असुरक्षा की भावना को बढ़ावा देकर उसे जीने का रास्ता बना दिया गया है.

गांधीजी जिस तरह हृदय से डर निकालने में कामयाब रहे, उस हद तक कायमाब शायद ही कोई दूसरा होगा. जो नेता ख़ुद ही कई सुरक्षाकर्मियों से घिरा हो वह लोगों को कैसे निडर बना सकता है? ऐसे नेता केवल डर का भाव सिखा सकते हैं.

गांधीजी को मौत से कभी डर नहीं लगा और ना ही उनमें सत्ता की भूख थी. भारत के लिए ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लिए उन्होंने लोगों को घृणा नहीं करना सिखाया. उन्होंने प्यार से संघर्ष करना और निराश हुए बिना संघर्ष करना सिखाया.[17]

गांधीजी की अहिंसा ने हमें बिना किसी हिंसा के बहादुरी से लड़ना सिखाया. अगर यह संभव नहीं हो तो उन्होंने हाथ उठाने की सलाह भी दी थी लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि लोग भीड़ बनकर किसी पर हमला कर दें. वे गायों को भी ख़ूब प्यार करते थे लेकिन उनका प्यार गायों की देखभाल करना था. इसका मतलब यह कभी नहीं था कि गायों की सुरक्षा के नाम पर आप किसी की हत्या कर दें.

उनके अपने जीवन काल में ही भूख हड़ताल और सत्याग्रह जैसे विरोध के तरीक़े बहुत प्रभावी नहीं रह गए थे. बावजूद इसके इन्हें आज भी गांधीजी की सबसे अहम विरासत के तौर पर देखा जा सकता है. अन्याय के ख़िलाफ़ अहिंसक संघर्ष के तौर पर इसे अपनाया जा सकता है.

हमें यह मानने की ज़रूरत भी नहीं है कि गांधीजी के पास दुनिया की सभी समस्याओं के हल थे. उनका प्रेम, त्याग, दूसरों पर भरोसा और सहअस्तित्व का संदेश आज के असुरक्षित समय और कलह से भरी दुनिया में प्रासंगिक हैं.

उनकी राह मानवता, सहअस्तित्व, दृढ़ मनोबल और शांति की राह है. इन्हीं रास्तों पर चलने वाले कई लोग ऐसे भी होंगे जिन्होंने न तो गांधीजी को पढ़ा होगा और न ही उनके बारे में सुना होगा.

ऐसा भी नहीं है कि गांधीजी ने ये रास्ते बनाए हैं. ये पहले से मौजूद थे लेकिन उन्होंने इसे फिर से चलन में लाकर हमें बताया है कि ये रास्ते हैं. इन्हें अपनाना ज्यादा महत्वपूर्ण है. हम इसके लिए गांधीजी को श्रेय दे भी सकते हैं और नहीं भी दे सकते हैं लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि हम उस राह को अपनाएं.

संदर्भ

1) भाना, सुरेन्द्र और गुलाम वाहेद. *द मेकिंग ऑफ़ अ पोलिटिकल रिफोर्मर: गाँधी इन साऊथ अफ़्रीका, १८९३-१९१४.* नई दिल्ली: मनोहर, २००५
2) बोंदुरंत्त, जुआअन वी. *हिंसा की जीत: गाँधीवादी दर्शन का संघर्ष.* प्रिन्सटन यूपी, १९९८ आईएसबीऍन ०-६९१-०२२८१-X
3) चेर्नस, ईरा. *अमरीकी अहिंसा: विचारों का इतिहास,* सातवाँ अध्याय .आईएसबीऍन १-५७०७५-५४७-७

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 9, Issue 3, March 2020

4) चड्ढा, योगेश . *गाँधी: एक जीवन* .आईएसबीऍन ०-४७१-३५०६२-१
5) डेलटन, डेनिस (ईडी) . *महात्मा गाँधी: चुनिन्दा राजनैतिक लेख* .इंडियानापोलिस/कैमब्रिज : हैकट प्रकशन कंपनी (Hackett Publishing Company), १९९६ आईएसबीऍन ०-८७२२०-३३०-१
6) गाँधी, महात्मा . *महात्मा गाँधी के संचित लेख* .नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, सुचना एवम प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, १९९४.
7) इश्वरण, एकनाथ (Eswaran, Eknath). *गाँधी एक मनुष्य* .आईएसबीऍन ०-९१५१३२-९६-६
8) फिशर, लुईस . *द एसेनसियल गांधी: उनके जीवन, कार्यों और विचारों का संग्रह* . प्राचीन: न्यूयार्क, २००२. (पुनर्मुद्रित संस्करण), आईएसबीऍन १-४०००-३०५०-१
9) गाँधी, एम.के. *गाँधी के पाठक: उनके जीवन और लेखन का एक स्रोत पुस्तक*.होमर जैक (ईडी) ग्रोव प्रेस, न्यू योर्क, १९५६
10) गाँधी, राजमोहन . *पटेल: एक जीवन* .नवजीवन प्रकाशन घर, १९९० आईएसबीऍन ८१-७२२९-१३८-८
11) हंट, जेम्स डी. *लन्दन में गाँधी* . नई दिल्ली: प्रोमिला एवं कंपनी, प्रकाशक, १९७८
12) मान्न, बर्नहार्ड, *महात्मा गाँधी और पाउलो फरेरी के शैक्षणिक अवधारणाएं.* क्लौबें, बी, में .(ईडी) राजनैतिक समाजीकरण एव शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन बीडी. ८.हैम्बर्ग १९९६.आईएसबीऍन ३-९२६९५२-९७-०
13) रूहे, पीटर. *गाँधी: एक छायाचित्र जीवनी* .आईएसबीऍन ०-७१४८-९२७९-३
14) शार्प, जीन. *गाँधी एक राजनैतिक नीतिज्ञ के रूप में, अपने मूल्यों और राजनैतिक निबंधो के साथ.* बोस्टन: एक्सटेंडिंग होराइज़ोन पुस्तकें, १९७९.
15) सोफ्री, गियान्नी. *गाँधी और भारत: केन्द्र में एक सदी* (१९९५) आईएसबीएन १-९००६२४-१२-५
16) गौरडन, हैम. *आध्यात्मिक साम्राज्यवाद से अस्वीकृति: गाँधी को बूबर के पत्रों की झलकी* .'*सार्वभौमिक अध्ययन की पत्रिका*, २२ जून १९९९.
17) गाँधी, एम.के "दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह"